MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue Feb. 2018

International Multilingual Research Journal

# Vidyawarta®

# 'आदिवासी साहित्य विमर्श'

डॉ.बापू जी.घोलप
संपादक

डॉ.भरत शेणकर
अतिथि संपादक

IMPACT 5.131 iijif FACTOR

MAH/MUL/ 03051/2012
ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

# विद्यावार्ता™

विशेषांक, फरवरी–२०१८

सत्यनिकेतन संचलित

## अॅड. मनोहरराव नानासाहेब देशमुख कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, राजूर, जि. अहमदनगर

नॅक पुनर्मुल्यांकित 'ए' श्रेणी

हिंदी विभाग एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

# आदिवासी साहित्य विमर्श

**डॉ. बाबासाहेब देशमुख**
प्राचार्य

**डॉ. भरत शेणकर**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
प्रा. **बबन थोरात**
हिंदी विभाग

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

25) आदिवासी विमर्श : सैद्धांतिक पक्ष
प्राचार्य बाबासाहेब विष्णू चव्हाण, भवानीनगर, बारामती || 90

26) सजीव के उपन्यासों में आदिवासी विमर्श
प्रा.बगनर ज्ञानेश्वर किसन, येरवडा, पुणे || 91

27) हिंदी नाटकों में चित्रित आदिवासी एवं दलित विमर्श स्वदेश दीपक के नाटकों के संदर्भ में
गाडीलोहार बन्सीलाल हेमलाल — डॉ. पी. व्ही. कोटमे, नाशिक || 93

28) हिंदी उपन्यास में चित्रित आदिवासी विमर्श
डॉ. संजय भाऊसाहेब दवंगे, कोपरगाँव || 97

29) गनपाखरं (खेत के पखेरू) काव्य में चित्रित ठाकर आदिवासी विमर्श
डॉ. अनिल काळे, नारायणगाँव, तह. जुन्नर || 99

30) 'धरती आबा' नाटक में आदिवासी विमर्श
शोधार्थी— धनेश मच्छिंद्र माने, पुणे || 102

31) संजीव के उपन्सासों में आदिवासी विमर्श ('धार' और 'पाँव तले की दूब'
शोध छात्र—गडाख दीपाश्री कैलास, औरंगाबाद || 106

32) ''संवेदनाओं की सघनता को व्यक्त करती आदिवासी कविताएँ''
डॉ. ईश्वर पवार, शिरुर, जि.पुणे. || 108

33) संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जीवन—संघर्ष
कीर्ति कुमारी, भागलपुर || 111

34) 'हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श'
निलेश एस. पाटील, सटाणा || 115

35) आदिवासी कविता में अभिव्यक्त विद्रोह के स्वर
प्रा. डॉ. भरत शेणकर, राजूर || 117

36) निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी विमर्श
प्रा. डॉ. दत्तात्रय टिळेकर, ओतूर || 120

37) आदिवासी साहित्य विमर्श
डॉ. मीना खरात, गंगापुर, जि. औरंगाबाद || 126

30

# 'धरती आबा' नाटक में आदिवासी विमर्श

शोधार्थी– धनेश मच्छिंद्र माने
हिंदी विभाग, सा. फु. पु. विश्वविद्यालय, पुणे

बिसवीं शती के अंतिम दशक से हिंदी साहित्य मे आदिवासी समुदाय को लेकर उनके जीवन से संबधीत एक सामाजिक विचार प्रवाह आगे बढ रहा है वह आदिवासी विमर्श के नाम से चर्चीत है। जिस प्रकार नारी विमर्श, दलित विमर्श ने साहित्य में अपना मजबूत स्थान प्राप्त किया हैं उसी प्रकार आदिवासी विमर्श या आदिवासी चेतना को लेकर लिखा गया साहित्य, साहित्य जगत में अपनी गहरी नींव डाल रहा है। आदिवासी से तात्पर्य है जो प्राचिन काल से या आदिकाल से इस देश की धरती पर रहते आ रहे हैं तथा भारत के मूल निवासी है, उन्हें आदिवासी कहा जाता है। इन आदिवासीयो की समस्याओं को चित्रित कर उन्हें अपने अस्तित्व के प्रति जागृत करना, प्रेरणा प्रदान करना, अपने हक एवं अधिकारों के लिए संघर्ष करने की चेतना निर्माण करने का कार्य साहित्य के माध्यम से किया जा रहा है। आदिवासीयों के जीवन से संदर्भीत विचारों को आदिवासी विमर्श कहा जाता है।

हजारों वर्षो से जंगलों, पहाडों और दुर्गम इलाकों में रहनेवाले आदिवासी आज भी समाज की मुख्य धारा से कटे हूए है। सदियों से शोषित, वंचित एवं अभावग्रस्त इस समाज को हमेशा दबाया और कुचला जाता रहा है। इनका खुले मैदान के निवासियों और तथाकथित सभ्य कहे जानेवाले लोगों से संपर्क न के बराबर रहा है। हमारी सरकार आदिवासियों के विकास के हेतु हर साल करोडों रूपयों का प्रावधान बजट में करती है लेकिन इसके बाद भी उनकी आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति में कोई बदलाव नही आया है। वर्तमान समय में सामने आयी हुई आदिवासी बालकों की कुपोषण की घटनाएं इसी बात की पुष्टि करते है। स्वास्थ्य सुविधाएं, पीने का साफ पानी, रोजी–रोटी, रहने के लिए पक्के मकान, इन इलाकों में संपर्क के क्षेत्र आदि मूलभूत सुविधाओं से आदिवासी समाज आज भी वंचित दिखाई देता है। खुले मैदान तथा शहरों के विकसित क्षेत्र से दूर पहाडों और जंगलो में गुजर–बसर करनेवाले इस समाज का विकास आज भी नही दिखाई देता है। कुछ जगह बाहरी प्रवेश, शिक्षा और संचार माध्यमों के कारण आदिवासियों के जीवन शैली में थोडा–बहुत बदलाव जरूर आया है। लेकिन हजारों सालों से शोषित रहे इस समाज के लिए परिस्थितियाँ आज भी कठिन और समस्याओं से ग्रस्त हैं।

वर्तमान समय में वृत्तपत्र तथा दुरदर्शन समाचार आदि जनसंचार माध्यमों द्वारा आदिवासीयो की समस्याओं को समाज के सामने लाया जा रहा है। शिक्षा, राजनीति आदि क्षेत्रों से दूर इस समाज को जागृत करने के लिए अनेक साहित्यकारों ने आदिवासी समुदाय को लेकर लेखन कार्य किया है। उनमें रमणिका गुप्ता, संजीव,राकेश कुमार सिंह, मैत्रयी पुष्पा, मेहरूनिसा परवेज,ऋषीकेश सुलभ आदि ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने आदिवासी जीवन से संबंधीत कथा–कहानियों को, आदिवासी जीवन की घटनाओं कों अपने साहित्य का विषय बनाया और अनेक उपन्यास,नाटक, कहानियाँ, कविताएंआदि साहित्यिक रचनाओं का सृजन किया है। इन साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से आदिवासीयों का जीवन, उनका रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार आदि का यथार्थ वर्णन करतें हुए उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिकआदि समस्याओं की मार्मिक अभिव्यक्ति की हैं।साथही पीछड़े हुए अशिक्षित इस समाज में चेतना भर कर उसे आज के सामाजिक प्रवाह में लाने की कोषिश की है।इनमें ऋषीकेश

सुलभ जी ने आदिवासीयों को प्रेरणा मिले और वे अपने अस्तित्व के प्रति सजग रहे इस उद्देश्य से अपने साहित्य की रचना की है। इनके साहित्य में आदिवासी चेतना प्रखर रूप से अभिव्यक्त हुई है। उनका 'धरती आबा' नाटक इस दृष्टि से महत्वपुर्ण है।आदिवासी जनसमुदाय में प्रेरणा निर्माण कर उन्हें अपने अस्तित्व के प्रति सजग करनेवाला 'धरती आबा' यह नाटक हिंदी नाटय साहित्य में महत्वपुर्ण नाटक है।

'धरती आबा' नाटक की कथावस्तु बिरसा मुंडा के जीवन संघर्षो पर केंद्रित है।नाटककार हृषीकेश सुलभ ने आदिवासियों के प्रेरणास्थान क्रांतीकारी बिरसा मुंडा के जीवन को नाटक में अंकित किया है। नाटक में चित्रित बिरसा का व्यक्तित्व संपूर्ण भारतीय समाज को प्रेरणा देता है। पिछड़ी जनजातियों, शोषित, उपेक्षित समाज का नेतृत्व कर उनको प्रेरणा देते हुएउन्हें गुलामी से मुक्त करने के लिए अंत तक संघर्ष करनेवाले मनुष्य के रूप में बिरसा का व्यक्तित्व नाटक में चित्रित हुआ है। अंग्रेजो के शासन काल में बिरसा का जन्म हुआ था। अंग्रेजों ने आदिवासीयों के जंगल–जमीन पर अधिकार प्राप्त करके आदिवासीयों में अपने धर्म का प्रसार करने के लिए मिशन स्कूल शुरू किये थें। बिरसा इन स्कूलों में पढ़–लिखकर बड़ा बनना चाहता था लेकिन जब स्कूल में मुंडाओं को हीन समझकर गाली दी जाती थी तो बिरसा को बहुत बुरा लगता था। आदिवासीयों को अंग्रेजो के मिशन स्कूल में अपमानित जीवन जीना पड़ता था। बिरसा अपने स्कूल के अनुभव को व्यक्त करते हुए कहते हैं–

''बिरसा : उन्होंने मुंडाओं को भिखारी कहा था, कहा कि सभी मुंडा झूठे और बेईमान होते है। भिखारी की तरह मिशन में आते है और भीतर ही भीतर सरदारों का साथ देते है। विश्वास घात करते है।''१

अंग्रेज सरकार आदिवासियों को लालच देकर एक तरफ स्कूल तथा मिशन में शामिल करके अपने धर्म का प्रचार–प्रसार करती है तो दूसरी ओर मिशन मे शामिल आदिवासीयो के साथ बुरा बर्ताव करतीहै, उन्हेंगंदा, नीच समझकर अपमान भी करता हैं। बिरसाने यह सब देखा और अनुभव किया कि हमारी कोम को ये विदेशी लोग बुरा–भला कहती हैफिर भी मेरा समाज इनके अत्याचारों को सहन कर गुलामी का जीवन जी रहा है।अपने लोगों की यहमजबुरी तथा अंग्रेजों का इनके प्रति भेदभाव एवं अन्याय देखकर बिरसा का आत्मसम्मान जागृत होता है।अपने समाज की यह पीड़ा बिरसा सहन नहीं कर पातें। वे मिशन स्कूल के अध्यापकों और अधिकारियों के हिन व्यवहार और बर्ताव को देखकर स्कूल छोड़ देते है। अपने समुदाय के लोगों को जानवर, अनपढ़, गंवार समझनेवाले इन अफसरों एवं अध्यापकों के प्रति बिरसा के मन में विद्रोह उत्पन्न होता है। वह अपने समुदाय के लोगों मे परिवर्तन लाने हेतु प्रयास करते है।

बचपन की इस अपमानजनक घटना ने बिरसा के मन में अपने समुदाय के लिए कुछ करने की प्रेरणा उत्पन्न होती है। भूख, गरिबी, लांछन, गुलामी से पीड़ित अपने लोगों की व्यथा उससे देखी नही जाती है। इसलिए वे अंग्रेज सरकार, सेठ, साहुकार, जमींदार एवं तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था में गुलामी का जीवन जी रहे आदिवासी समुदाय के मुक्ति हेतु संघर्ष करते हैं। आज का समाज और सरकार आदिवासीयों को उसी नजरिए से देखती है जो बरसों पहले अंग्रेज सरकार का दृष्टिकोन रहा था। आज के राजनीतिक पार्टियाऔरनेता लोग वोट पाने के लिए आदिवासियों को ढेर सारे आश्वासन देते है लेकिन वास्तव में चूनाव के बाद यह पार्टियाऔर उनकेनेता लोग अपने दिए हुए वादे भूल जाते हैं। जिसके कारण आदिवासीयों की समस्याएँ जैसी की तैसी रह गयी हैं। इस परिस्थिति को बदलने के लिएतथा इनके खिलाफ आवाज उठाने के लिए आदिवासी समाज में बिरसा के जैसे व्यक्तित्व की कमी है। जो इस व्यवस्था में परिवर्तन ला सकें। ऋषीकेश सुलभ जी ऐसे ही व्यक्तित्व की तलाश कर रहे है जो आदिवासीयों को उचित दिशा प्रदान कर सकें।

आदिवासी समाज आज भी अपने अधिकारों के प्रति सजग नहीं दिखाई देता है क्योंकि अशिक्षा, अंधश्रद्धा, रूढि, परंपरा आदि के कारण वहआज भी पीछड़ा हुआ है। इसका गलत लाभ स्वार्थी लोग उठा रहे है। सदियों से जिस जंगल में आदिवासी अपना जीवन व्यतीत करते थे। उस जमीन तथा जगल पर कोई भी आकर अपना हक जता रहा है। साथ हीहमारी सरकार ने भी आदिवासीयों को उन्नति की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। उन्होंने विकास के नाम पर इन जंगलों को काटकरबड़े–बड़े तालाब, फॅक्टरीयों का निर्माण कियाऔर आदिवासीयों को बेघर किया।आदिवासीयों को अपने इस जगल को छोड़कर स्थलातंर करना पड़ रहा है।जो आदिवासी समाज इन जंगलो और पहाड़ों में गुजर–बसर करतें थें, अपनी जिवनावश्यक चीजों की पूर्तता जंगलो से पूरी करतें थें,उनकासंपूर्ण जीवन जिस जंगल पर आधारित था,वही जंगल और जमीन न रहने के कारण आदिवासी समाज अपनी रोजी–रोटी के लिए सिमेंट के जंगलों में दर–दर भटकता हुआ दिखाई देता है।एक ओर उनके जीवन का आधार (जंगल) नहीं रहा तो दूसरी ओर अपना पेट भरने के लिए उन्हें कोई उचित साधन भी नहीं प्राप्त हो रहे हैं।जिसके परिणामस्वरूप आदिवासी समाज आज भी वंचित एवं उपेक्षित जीवन जी रहा है। वे अधिकार हिन होकर निराशामय जीवन जीने के लिए मजबुर हो गए हैं। नाटक में आदिवासीयों के इसी अवस्था को चित्रित किया है। 'धरती आबा' नाटक में अंग्रेज सरकार ने आदिवासीयों को गुमराह करके उनके जंगल–जमीन पर कब्जा कर लिया। जिससे आदिवासी निरास्त्रित हो गए। उनकी यह करूण व्यथा नाटक में इस प्रकार प्रस्तुत हुई है–

''जिस जमीन में हमारे दादा–परदादा
गाय–गोरू
चराते रहे...जिस जंगल की एक–एक
डाल और
एक–एक पत्ता हमारा है, वह जंगल
अब हमारा नहीं रहा।'' २

इस प्रकार आदिवासीयों के जंगल छिने जाने पर आदिवासी बेघर हो जाते हैं। बिरसा अपने लोगो की जमीन, जंगलऔर अधिकार वापस पाने के लिए प्रयत्न करता है। वह अंग्रेज बाबू के पास अर्जी लेकर जाता है और उनसे अपने जंगल और जमीन की मॉग करता है–

''बाबू : क्या है कागज में ?
बिरसा : अर्ज़ी है। दावा है हमारा।
बाबू : किस बात की अर्ज़ी ? किस चीज़ पर
दावा ?
बिरसा : जंगल पर दावा।...जंगल के लिए अर्ज़ी
। हमें हमारे जंगल वापस चाहिए।''३

बिरसा के इस तरह जंगल की मॉग करने पर अंग्रेजी बाबू गुस्सा होकर बिरसा को धमकाता है लेकिन बिरसा उन्हें मुँहतोड जवाब देता हुआ कहता है–

''बिरसा : साहब को आप...महाजन को तुम...
और मुंडा को तू...।
नीच समझता है मुंडा को?
सुन रे दिकू, मेरा नाम है बिरसा मुंडा। ....ठीक
से बात कर।
मैं साहेब और सरकार से नहीं डरता।''४

बिरसा के इस तरह अधिकार मॉगने के बाद भी उन्हें अपने हक नहीं मिल पातें। उल्टा उनका अपमान किया जाता है। तो वे तय करते है कि अपने हक को पाने के लिए क्रांति करना आवश्यक है। इसलिए वे आदिवासीयों को एकत्रित कर उन्हें संघर्ष करने के लिए कहतें है। वह अपने इस लड़ाई को 'उलगुलान' नाम देते है।इस लड़ाई के कारण अंग्रेजों की सत्ता एवं प्रभुता को चुनौती मिलती है। उनका यह क्रांतिकारी रूप आदिवासीयों में चेतना निर्माण करता है। बिरसा सामाजिक बदलाव के लिए समाज के हर व्यक्ति को सहभाग लेने के लिए कहता है। उन्हें संघटित कर मानवतावादी समतामूलक धर्म की स्थापना करता है।

बिरसा का समाजसुधारक रूप भी आदिवासी समुदाय को प्रेरणादायी है। 'धरती आबा' नाटक में वे एक ओर सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के

करते है तो दूसरी ओर आदिवासी ... सुधारणा कर अपने समाज को नए विचारों ... प्रेरित करते हुए दिखाई देते है। बिरसा ... लोगो मे फैले अंधविश्वास को दूरकर वैज्ञानिक ... अपनाने पर बल देते है।परंपरा से आदिवासी ... मे जो कर्मकाड कूट–कूट कर भरा है उसे ... करने का सफल प्रयास करते हैं। नाटक में ... की मृत्यु होने के बाद उसकी कब्र में उसके ... शरीर के साथ चॉंदी की अँगूठी और कुछ पैसे ... दफन किया जाता है।ताकि परलोक जाकर ... उस अँगूठी को बेचकर खाएगी। साथ ही ... आत्मा को शांती मिलने के लिए कुछ ... आवश्यक वस्तुओंको भी मृत शरिर के साथ ... दफनाया जाता है। बिरसा यह सब देखता है और ... कहता है किमृत व्यक्ति तो मृत हो चूका है लेकिन ... जो जिंदा है, भूख से बेहाल होकर तड़प रहे है, ... लोगों कोभोजन देने की अपेक्षा उसे व्यर्थ में ... दफनाया जा रहा है।बिरसा ऐसे मृत व्यक्ति के साथ ... जो चिजे दफनाई गई है उसे निकालकर उन चीजों ... से भूख से तड़फ रहे लोगों के लिएचावल खरीदकर ... भोजन की व्यवस्था करता है। अपने लोगों में फैले ... अंधविश्वास को दूर कर उन्हें सचेत करते हुए कहते ... है कि "भूख पर भूखे का हक होता है, देवी–देवताओं ... का नहीं"५ बिरसा के ये विचार आज भी अंध ... विश्वास मे भरे आदिवासी समाज को नई विचारों ... की रोशनी प्रदान करते हैं। बिरसा आदिवासीयों में ... फैली मूर्तिपूजा, देवी–देवताओं की उपासना, ठाकुरों, ... जमींदारों की सेवा आदि का विरोध करता है। इस ... तरह अपने समाज की रक्षा करना, समाज की ... बुराईयों को दूर करने की प्रेरणा बिरसा के व्यक्तिमत्व ... से आदिवासीयों को मिलती है।

अतः कहा जा सकता है कि 'धरती आबा' नाटक आदिवासी समुदाय में चेतना निर्माण करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। नाटक में अंकित बिरसा का चरित्र आदिवासीयों के मन में प्रेरणा उत्पन्न करता है।आदिवासीयों को गुलामी से मुक्त कर उनके खोए हुए आत्मसम्मान को वापस दिलाना, उनके अधिकार वापसी के लिए अंत तक संघर्ष करना, अपने समुदाय को अंधश्रद्धा, [illegible] में मुक्त कर समाज सुधार करना, समाज को नए विचार प्रदान करते हुए उन्हें मुख्य प्रवाह में लाने का प्रयास करना आदि कार्य [illegible] अशिक्षित, शोषित, पिछड़े हुए आदिवासीयों को जागृत करते है।

संदर्भ सूची–


१. धरती आबा – ऋषिकेश सुलभ, पृ. [illegible]
२. धरती आबा – ऋषिकेश सुलभ, पृ. [illegible]
३. धरती आबा – ऋषिकेश सुलभ, पृ. [illegible]
४. धरती आबा – ऋषिकेश सुलभ, पृ. [illegible]
५. धरती आबा – ऋषिकेश सुलभ, पृ. ३[illegible]